IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''विद्यालय सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

सरोज कुमारी

पीएच.डी. स्कोलर, शिक्षा संकाय जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

डॉ. नीलम तिवारी

सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''विद्यालय सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि विद्यालयीय सहयोग दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है। अध्ययन में विद्यालयीय सहयोग के प्रमुख आयामों, जैसे–अध्यापक सहयोग, विद्यालयीय वातावरण, शिक्षण–अधिगम सामग्री, विद्यालयीय संसाधन, मार्गदर्शन एवं सहपाठी सहयोग के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण शोध विधि एवं न्यादर्श में 200 विद्यार्थियों हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया तथा संकलित दत्तों का उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यालयीय सहयोग एवं दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है। जिन विद्यार्थियों को विद्यालय से अधिक सहयोग, प्रेरणा एवं आवश्यक शैक्षिक सुविधाएँ प्राप्त हुईं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई। अतः यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए विद्यालयीय सहयोग, अध्यापकों की सकारात्मक भूमिका, उपयुक्त शिक्षण–अधिगम सामग्री तथा सहयोगात्मक विद्यालयीय वातावरण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द : विद्यालयीय सहयोग, दिव्यांग किशोर विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, अध्यापक सहयोग, शिक्षण–अधिगम सामग्री, विद्यालयीय वातावरण।

प्रस्तावना :

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है तथा यह उसके बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास का प्रमुख आधार है। प्रत्येक विद्यार्थी, चाहे वह दिव्यांग हो अथवा सामान्य, अपनी क्षमताओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी है। दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति केवल उनकी व्यक्तिगत योग्यता पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने वाले सहयोग, मार्गदर्शन, संसाधनों तथा अनुकूल शैक्षिक वातावरण पर भी समान रूप से आधारित होती है। यदि विद्यालय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोगात्मक वातावरण, उपयुक्त शिक्षण–अधिगम सामग्री, प्रशिक्षित अध्यापक, आवश्यक सुविधाएँ तथा सकारात्मक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराता है, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

वर्तमान समय में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विद्यालयों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह विद्याथियों के आत्मविश्वास, सहभागिता, अध्ययन–अभिरुचि तथा व्यक्तित्व विकास का भी प्रमुख केन्द्र है। अध्यापकों का सहयोग, सहपाठियों का सकारात्मक व्यवहार, विद्यालय प्रशासन का समर्थन तथा आवश्यक शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता दिव्यांग विद्यार्थियों के अधिगम का प्रभावी बनाती है और उनकी शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध–पत्र ''विद्यालय सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर केन्द्रित है। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यालयोय सहयोग एवं दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण करना तथा यह ज्ञात करना है कि विद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने वाले सहयोगात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यालयों, अध्यापकों, शिक्षा–प्रशासकों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करेंगे तथा दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु प्रभावी शैक्षिक उपायों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होंगे।

औचित्य

दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें विद्यालयीय सहयोग एक प्रमुख निर्धारक है। विद्यालय में अध्यापकों का सहयोग, उपयुक्त शिक्षण–अधिगम सामग्री, आवश्यक शैक्षिक संसाधन, सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण तथा मार्गदर्शन विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा से संबंधित अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी विद्यालयीय सहयोग के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का समग्र एवं वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। इसी शोध–अंतर को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन विद्यालयीय सहयोग के विभिन्न आयामों एवं दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अध्यापकों, विद्यालय प्रशासकों, शिक्षा–नियोजकों तथा नीति–निर्माताओं को दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिक सहयोगात्मक एवं प्रभावी शैक्षिक वातावरण विकसित करने में उपयोगी दिशा प्रदान करेंगे। साथ ही, यह अध्ययन विद्यालयों में उपलब्ध सहयोगात्मक व्यवस्थाओं के सुदृढ़ीकरण तथा दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु एक महत्वपूर्ण आधार सिद्ध होगा।

समस्या अभिकथन :–

''विद्यालय सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

1. विद्यालय सहयोग – विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास हेतु अध्यापकों, विद्यालय प्रशासन, सहपाठियों, शिक्षण–अधिगम सामग्री, मार्गदर्शन तथा आवश्यक शैक्षिक सुविधाओं के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले समग्र सहयोग से है।
2. दिव्यांगता – विकलांग के स्थान पर दिव्यांग शब्द का प्रयोग उन लोगो को सम्मान देने के लिए किया गया है जिनके किसी या कुछ अंगों में विकार है ये जन्मजात या किसी दुर्घटना के फलस्वरूप हो सकता है।
3. शैक्षिक उपलब्धि – जैसा की नाम से स्पष्ट होता है शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है इसके अन्तर्गत एक बालक एक समयावधि में जो अध्ययन करता है उसके परिक्षण के बाद प्राप्त परिणाम ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि बताता है।

परिसीमन

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग के सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों के शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

शोध विधि

शोधकर्त्री ने शोध अध्ययन कार्य में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श :

शोध में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक विधि वह विधि है जो बहुत बडे समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। सभी विद्यार्थी राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः न्यादर्श का चयन सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से किया गया। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों में न्यादर्श के यादृच्छिक विधि के अनुसार 200 दिव्यांग विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनमें से ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थी एवं शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थी विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

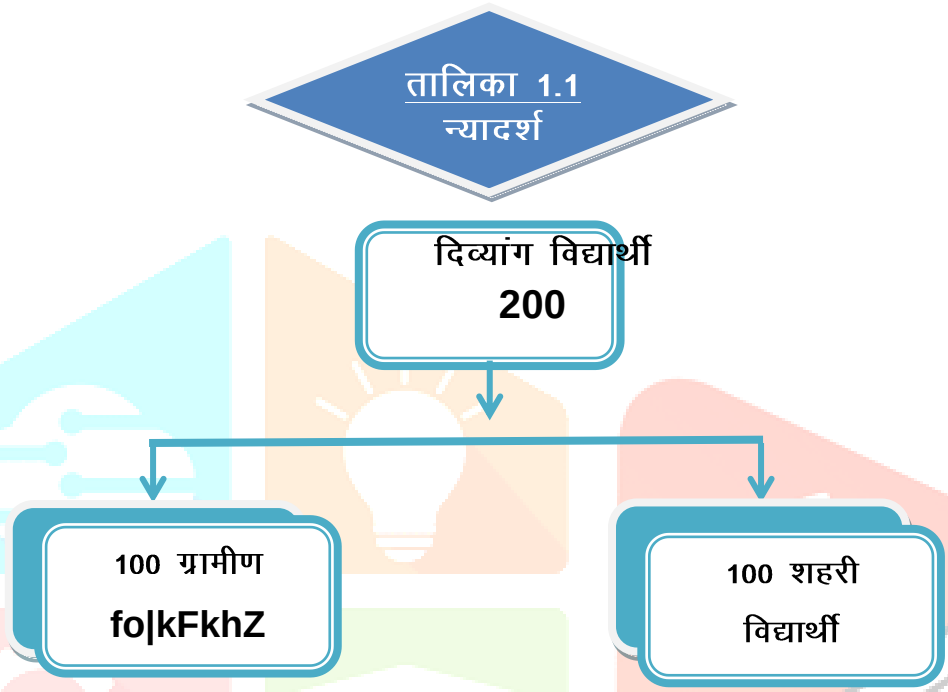

शोध उपकरण

शोधकार्य में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

क्र.स.	उपकरण का नाम	स्थिति
1	विद्यालय सहयोग मापनी	स्वनिर्मित

सांख्यिकी

शोधकर्त्री द्वारा दत्तों के संकलन हेतु संभावित रूप से प्रमिशत, मध्यमान, मानक विचलन, टी परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना – 1 उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

तालिका संख्या 1.2

विद्यार्थी	N	M	SD	SED	D	Df	T-Test
ग्रामीण	100	128.59	11.02	1.87	25.59	198	13.68
शहरी	100	154.18	15.05				

** 0.05 सार्थक स्तर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग के प्राप्तांकों की गणना के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 128.59 तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 154.18 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का प्रमाप विचलन 11.02 तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का प्रमाप विचलन 15.05 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें टी–मान 13.68 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.97 गणना द्वारा प्राप्त टी–मान सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर परिकल्पना–1 ''उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग मं सार्थक अन्तर है।'' अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

आरेख संख्या– 1

उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त विद्यालय सहयोग के प्राप्तांकों का आरेख प्रदर्शन

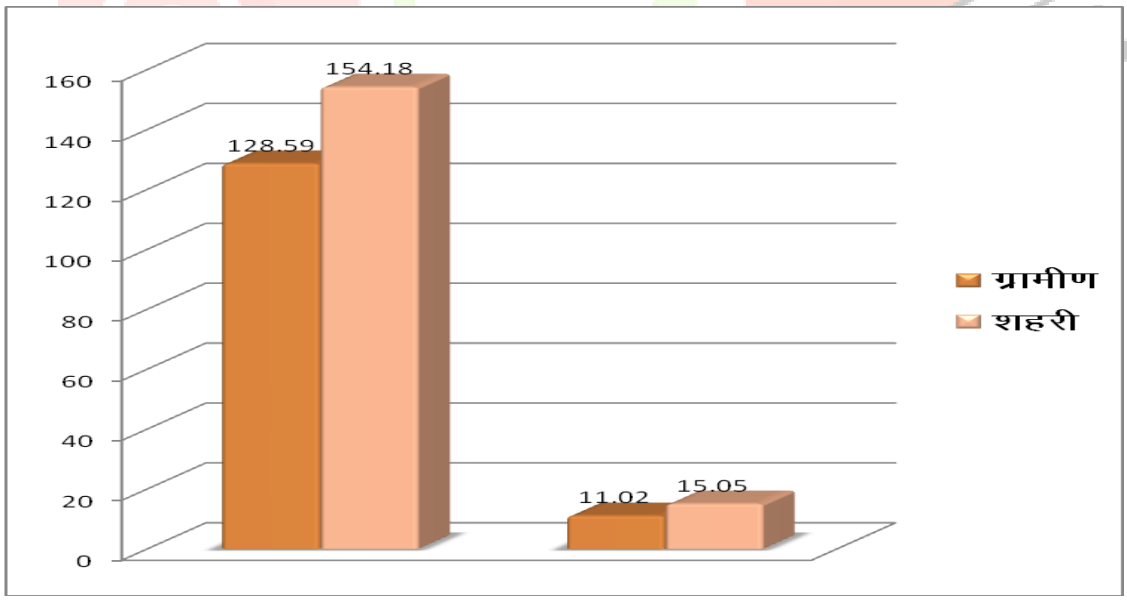

संदर्भ सूची

- Ainscow, M. (2005). Developing inclusive education systems: What are the levers for change? Journal of Educational Change, 6(2), 109-124.
- Behera, D. (2020). Attitude of pre-school and primary school teachers towards disability and inclusion.
- Gangwar, S., & Singh, S. (2019). भारत में दिव्यांगजनों की शिक्षा : स्थिति, चुनौतियाँ एवं समाधान।
- Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. Ministry of Law and Justice.
- Kumar, D. (2022). भारत की नई शिक्षा नीति (NEP-2020) : दिव्यांग बच्चों के लिए।
- Mahawariya, K., & Yadav, M. (2020). दिल्ली विश्वविद्यालय के समान अवसर प्रकोष्ठ में दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का अध्ययन।
- Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). Including children and youth with disabilities in education: A guide for practitioners. NCERT.
- Patgiri, H. (2017). Rights to Education and Children with Special Needs: Role of Sarva Shiksha Abhiyan in Barpeta District of Assam.
- Rani, P. (2021). भारत में विकलांग बच्चों की नीतियों एवं कार्यक्रमों का अध्ययन ।
- Tripathi, D. (2019). दिव्यांग बच्चों के लिए सरकारी योजनाओं के प्रति शिक्षकों की जागरूकता ।
- United Nations. (2006). Convention on the Rights of Persons with Disabilities. United Nations.
- United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. (1994). The Salamanca statement and framework for action on special needs education. UNESCO.
- United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. (2020). Global education monitoring report 2020: Inclusion and education - All means all. UNESCO.
- Wells, M. (2018). Inclusion of students with special needs in the general education classroom.